मुनाजात
अमीरुल मो'मिनीन
इब्ने अबी त़ालिब رضي الله عنه
मुरत्तब
खुसरो क़ासिम
मुतरजिम (हिन्दी)
डो. शहेज़ादहुसैन काज़ी

मुनाजात
अमीरुल मो'मिनीन
इब्ने अबी त़ालिब ؓ

मुरत्तब

खुसरो क़ासिम

मुतरज़िम (हिन्दी में)

डो. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

किताब का नाम : मुनाजात अमीरुल मो'मिनीन ईब्ने अबी त़ालिब ﷺ

मुरत्तब : ख़ुसरो क़ासिम

मुतरजिम : डॉ. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

हदिया : रु. **25/-**

कम्पोज़िंग : ईमाम जाफर सादिक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत), मोडासा (गुजरात)

:: मिलने का पता ::

ईमाम जाफर सादिक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत)

मोडासा (गुजरात)

(मो) 8511021786

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

हज़रत अली ﷺ के इल्म-ओ-फज्ल कि सब से बड़ी दलील यह इरशाद-ए-नब्वी ﷺ है कि आप ﷺ ने इरशाद फरमाया कि मैं इल्म का शहर हूँ और अली ﷺ उस का दरवाजा हैं। अल्लाह के नबी ﷺ के बाद फ़साहत ओ बलागत के मैदान में कोई अमीरुल मो'मिनीन ﷺ का मुक़ाबला नहीं कर सकता है । आप के इर्शादात की तरह जो दुआएं आप से मनक़ूल हैं या जो आप ने अपने शागिर्दों को तालीम फरमाई हैं वह भी बेमिसाल हैं । ऐसी ही एक आपकी मुनाजात है जिस में आप ने आयात-ए-क़ुरआनी को इंतेहाई ख़ूबसूरती से इस्तेमाल किया है। यह मुनाजात मस्जिद-ए-कूफ़ा में आप के मक़ाम-ए-शहादत पर लिखी हुई है । मैं ने सोचा तमाम लोगों के नफ़े के लिए इस को तबअ किया जाए, क्यूँ कि यह एक कंज़-ए-मख़फ़ी है।

या अल्लाह ﷻ अमीरुल मो'मिनीन ﷺ के वसीले से जिन बातों से इस दुआ में पनाह मांगी गई है हमें भी पनाह अता कर और जो कुछ तलब किया है वह भी अता कर, आमीन बजाह-ए-सैयदुल मुर्सलीन ﷺ ।

तालिब-ए-शफ़ाअत-ए-रसूल ﷺ

ख़ुसरो क़ासिम

असिस्टेंट प्रोफेसर

मेकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेन्ट

A.M.U. अलीगढ़

:: अर्जे मुतरजिम ::

अल्लाह ﷻ के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख्शनेवाला है, नही है कोई मा'बूद अल्लाह ﷻ के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ के रसूल है। अल्लाह ﷻ का शुक्रगुजार हूँ कि उसने मुझ से 'मुनाजात अमिरुल मो'मिनीन अली इब्ने अबी तालीब' किताब का हिन्दी लिपियान्तर करने का काम लिया।

प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने कूफा की मस्जिद में जहां सैयदना इमाम मौला अली عليه السلام की शहादत की जगह मुनाजात लिख्खे हुए है उनको उर्दू में किताब की शक़्ल में छपवाकर बहुत ही उम्दा काम अन्जाम दिया है । इसी किताब को मैं ने हिन्दी लिपियान्तर करके हिन्दी जबान के लोगों को नफा पहुंचाने की जो काविश की है अल्लाह ﷻ उसे कुबूल फरमाये व मुझे रसूलल्लाह ﷺ की शफाअत नसीब फरमाए !

गुलाम-ए-दरे-ज़हरा-ए-पाक رضي الله عنها

डो. शहज़ादहुसैन क़ाज़ी

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

حضرت علی کا درود پاک

ا . اللھم داحی المدحو وباری المسموکات وجبار القلوب علی فطرتھا شقیھا وسعیدھا اجعل شرائد صلواتک ونوامی برکاتک ورأفة تحننک علی محمد عبدک ورسولک الخاتم لما سبق والفاتح لما أغلق والمعلن الحق بالحق والدامغ لجیشات الأباطیل کما حمل فاضطلع بأمرک بطاعتک مستوفزاً فی مرضاتک بغیر نکلٍ عن قدم ولاوھنٍ فی عزم ، واحیاً لوحیک حافظاً لعھدک ماضیاً علی نفاذ أمرک ،حتی أوری قبساً لقابس الاء اللہ تصل بأھلہ أسبابہ بہ ،ھدیت القلوب بعد

خوضات الفتن والإثم وابهج موضحات الاعلام ومنيرات الإسلام ونائرات الأحكام ،فهو أمينک المأمون وخازن عملک المخزون ، وشهيدک يوم الدين وبعيثک نعمة ورسولک بالحق رحمةً، اللهم افسح له مفسحاً فی عدنک وأجزه مضاعفات الخير من فضلک ،مهنات له غير مكدرات من وفور ثوابک المضنون وجزيل عطائک المخزون ، اللهم اعل على بناء البانين بناءه .

हज़रत अली ﷺ का दुरुदे पाक

तर्जुमा: ऐ अल्लाह ﷻ! ज़मीनों का फ़र्श बिछाने वाले और आसमानों के पैदा करने वाले, और शक़ी और नेक दिलों को उनकी फितरत के मुवाफ़िक़ जोड़ने वाले, कर दे अपनी बुज़ुर्गतरीन रहमतें और बढ़ने वाली बरकतें और अपनी मेहरबानियाँ मुहम्मद ﷺ पर, जो तेरे बंदे और तेरे रसूल हैं, जो अपने से पहले को ख़त्म करने वाले, और सर बंद चीजों को खोलने वाले हैं, और हक़ को हक़ तरीके से ज़ाहिर करने वाले हैं और बातिल के लश्करों का सर तोड़ने वाले हैं, वह मुस्तैद हो गए जिस तरह उन पर ज़िम्मेदारी डाली गई, तेरे हुक्म से तेरी फर्माबरदारी

के लिए जल्दी करते हुए तेरी मरज़ियात में बग़ैर कदम पीछे हटाने के और बग़ैर किसी सुस्ती के इरादों में, तेरी वही कि निगहदाश्त करने वाले और तेरे अहद की हिफ़ाज़त करने वाले। तेरे हुक्म को नाफ़िज़ करने में अज़्म पर कायम करने वाले, यहाँ तक कि दे दिया शोला नूर का रौशनी लेने के लिए, अल्लाहﷻकी ने'मतें अल्लाह वालों के साथ असबाब को मिला देती है। आप ही के जरिये क़ुलूब को हिदायत दी गई, बाद उनके फितनों और गुनाहों में डूब जाने के, और ज़ीनत दी आप ने चमकते हुए निशानों को, और इस्लाम को रौशन करने वाली चीजों को, और रौशन एहकाम को, पस वह तेरे अमीन ओ मो'तमिद हैं। और तेरे पोशीदा इल्म के मुहाफ़िज़ हैं, और तेरे गवाह हैं क़यामत के दिन, और तेरी भेजी हुई ने'मत हैं, और तेरे रसूल-ए-बरहक हैं, जो सरापा रहमत हैं, ऐ अल्लाहﷻ! कुशादा करदे उन के लिए जगह अपनी बहिश्त में और जज़ा दे उनकी नेकियों की चंद दर चंद, अपने फज्ल से जो ख़ुशगवार हों, उनके लिए और बेकदूरत हों, तेरा अज़ीम सवाब महफ़ूज़ है, और बड़ी अता जो जमा की गई है। ऐ अल्लाहﷻ! बलन्द कर दूसरे मंज़िल वालों की मंज़िल से उनकी मंज़िल को।

(ज़ाद अलसईदः मौलाना तन्वी, स.: 36-37)

मुनाजात हज़रत अली ﵁

मो'तबर रिवायात में है कि हज़रत अली ﵁ अपने ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में मस्जिद-ए-कूफ़ा में अक्सर यह मुनाजात करते थे, आज भी मस्जिद-ए-कूफ़ा में आपके मक़ाम-ए-शहादत पर यह मुनाजात लिखी हुई है ।

اللهم إنى أسألک الأمان يوم لاينفع مال ولابنون ، إلا من أتى الله بقلب سليم ، وأسألک الأمان يوم يعض الظالم على يديه ،يقول يليتنى اتخذت مع الرسول سبيلاً، وأسألک الأمان يو م يعرف المجرمون بسيماهم فيؤخذ بالنواصى والأقدام ، وأسألک الأمان يو م لايجزى والد عن ولده ولامولود هو جازٍ عن والده شيئاً ، إن وعد الله حق ، وأسألک الأمان يو م لاينفع الظالمين معذرتهم ولهم اللعنة ولهم سوء الدار ، وأسألک الأمان يو م لا تملک نفس لنفس شيئاً ،والأمر يومئذ لله ،وأسألک

الأمـان يـو م يـفـر الـمرء من أخيه وأمه وأبيه وصاحبته
وبـنيـه ، لـكل امرئ منهم يومئذ شأن يغنيه ، وأسألك
الأمـان يـو م يـو د الـمـجـرم لويفتدى من عذاب يومئذ
ببـنيـه وصاحبته وأخيه وفصيلته اللتى تؤويه ، ومن فى
الأرض جـميـعـاً ، ثـم يـنـجيــه ، كلا إنها لظى ، نزاعة
لـلشـوى ، مـولاى مـولاى ، أنـت الـمولى وأنا العبد ،
وهـل يـرحـم العبد إلا المولى ، مولاى يا مولاى ، أنت
الـمـالك وأنا المملوك ، وهل يرحم المملوك إلا
الـمـالك ، مولاى يامولاى ، أنت العزيز ونا الذليل ،
هـل يـرحـم الـذليل إلا العزيز، مولاى يا مولاى ، أنت
الـخـالـق وأنـا الـمـخـلـوق ، وهل يرحم المخلوق إلا
الـخـالق ، مولاى يا مولاى ، أنت العظيم وأنا الحقير ،
وهـل يرحم الحقير إلا العظيم ، مولاى يا مولاى ! أنت
القوى وأنا الضعيف ، وهل يرحم الضعيف إلا القوى،
مـولاى يـامـولاى ! أنـت الغنى وأنا الفقير ،وهل يرحم
الـفـقير إلا الغنى ، مولاى يا مولاى ! أنت المعطى وأنا
الســائـل ، وهـل يـرحـم السائل إلا المعطى ، مولاى يا

مولاى ! أنت الحى وأنا الميت ، وهل يرحم الميت إلا الحى ، مولاى يا مولاى ! أنت الباقى وأنا الفانى ، وهل يرحم الفانى إلا الباقى ، مولاى يا مولاى ! أنت الدائم وأنا الزائل ، وهل يرحم الزائل إلا الدائم ، مولاى يا مولاى ! أنت الرازق وأنا المرزوق، وهل يرحم المرزوق إلا الرازق ، مولاى يا مولاى ! أنت الجواد وأنا البخيل ، وهل يرحم البخيل إلا الجواد ، مولاى يا مولاى ! أنت المعافى وأنا المبتلى ، وهل يرحم المبتلى إلا المعافى ، مولاى يا مولاى ! أنت الكبير وأنا الصغير ، وهل يرحم الصغير إلا الكبير ، مولاى يا مولاى ! أنت الهادى وأنا الضال ، وهل يرحم الضال إلا الهادى ، مولاى يا مولاى ! أنت الرحمٰن وأنا المرحوم ، وهل يرحم المرحوم إلا الرحمٰن ، مولاى يامولاى ! أنت السلطان وأنا الممتحن ، وهل يرحم الممتحن إلا السلطان ، مولاى يا مولاى ! أنت الدليل وأنا المتحير ، وهل يرحم المتحير إلا الدليل ، مولاى يا مولاى ! أنت الغفور وأنا المذنب ، وهل يرحم

المذنب إلا الغفور ، مولاى يا مولاى ! أنت الغالب وأنا المغلوب ، وهل يرحم المغلوب إلا الغالب ، مولاى يا مولاى ! أنت الرب وأنا المربوب ، وهل يرحم المربوب إلا الرب ، مولاى يا مولاى ! أنت المتكبر وأنا الخاشع ، وهل يرحم الخاشع إلا المتكبر ، مولاى يامولاى ! ارحمنى برحمتك وارض عنى بجودك وكرمك وفضلك ، يا ذا الجود والإحسان والطول والإمتنان ، برحمتك يا أرحم الراحمين .

तर्जुमा: ख़ुदाया ! मैं तुझ से दरख़्वास्त करता हूँ उस रोज़ के अमान कि जिस दिन माल व औलाद फ़ायदा न देंगे, सिवाए उसके जो अल्लाह ﷻ के पास आए क़ल्ब-ए-सलीम के साथ, और मैं तुझ से सवाल करता हूँ उस दिन के अमान का जिस दिन ज़ालिम अपने हाथ काट रहा होगा और कहता होगा कि काश मैं ने रसूलल्लाह ﷺ के साथ रास्ता अख़्तियार कर लिया होता, और मैं सवाल करता हूँ उस दिन कि अमान का जिस दिन मुजरिम अपनी अलामतों से पहचान लिए जाएंगे, और पेशानी और कदमों के साथ पकड़ लिए जाएँगे और मैं सवाल करता हूँ उस दिन की अमान का जिस रोज़ वालिद अपनी औलाद के लिए बदला न होगा और न बच्चा अपने बाप के कुछ काम आएगा, बेशक ख़ुदा का वादा हक़ है, और मैं सवाल करता हूँ उस दिन की अमान का जिस दिन ज़ालिमों को उनकी माज़ेरत फ़ायदा न देगी, और उनके ऊपर लानत होगी, और उनके लिए बदतरीन घर होगा, और मैं सवाल करता हूँ उस दिन की अमान का जिस दिन कोई नफ़्स किसी नफ़्स का भी साहिब-ए-इख़्तियार न होगा और हुक़्म उस दिन बस ख़ुदा के लिए होगा, और मैं सवाल करता हूँ उस दिन के अमान का जिस दिन इंसान अपने

भाई, माँ, बाप और औरत और औलाद से भाग रहा होगा, उस रोज़ हर आदमी की मशगूलियत अपने में दूसरे से बेगाना बना देगी, और मैं सवाल करता हूँ उस दिन की अमान का जिस दिन काफ़िर व मुजरिम तमन्ना करेगा कि काश उस दिन की अज़ाब से अपनी औलाद, औरत और भाई और ख़ानदान को अपना फ़िदया करार दे देता और वह उसकी हिमायत करते, और उन सबको फ़िदया करार देता जो तमाम रु-ए-ज़मीन पर हैं और अज़ाब-ए-क़ब्र से निजात पाता, हरगिज़ नहीं निजात पाएंगे, आतिश-ए-जहन्नुम शोलावर है, भड़क रही है, ताकि जला दे ।

ऐ मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू मौला है और मैं बंदा हूँ, और बंदे पर मौला के अलावा और कौन रहम करेगा? ऐ मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू मालिक है और मैं ममलूक हूँ, और मालिक के सिवा ममलूक पर कौन रहम करेगा? ऐ मेरे मौला! ऐ मेरे मौला! तू इज्ज़त ओ इक़्तेदार वाला है, और मैं ज़िल्लत ओ रुसवाई वाला, और ज़लील पर सिवाए इज्ज़त वाले के कौन रहम करेगा? ऐ मेरे मौला! ऐ मेरे मौला! तू ख़ालिक़ है और मैं मख़लूक़ हूँ और मख़लूक़ पर ख़ालिक़ के सिवा कौन रहम करेगा? मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू अज़ीम है और मैं हक़ीर हूँ, और हक़ीर पर सिवाए अज़ीम के कौन रहम करेगा? मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू ताक़तवर है और मैं कमज़ोर हूँ, और कमज़ोर पर ताक़तवर के अलावा और कौन रहम करेगा? मौला ! ऐ मेरे मौला! तू मालदार है और मैं मोहताज हूँ, और मोहताज पर सिवाए मालदार के कौन रहम करेगा? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू अता करने वाला है और मैं साइल हूँ, और साइल पर सिवाए अता करने वाले के कौन रहम करेगा? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू ज़िंदा है और मैं मुर्दा हूँ, और मुर्दा पर कौन रहम करेगा सिवाए ज़िंदा के? मेरे मौला! ऐ मेरे मौला ! तू बाक़ी है और मैं फ़ानी हूँ, और फ़ानी पर बग़ैर बाक़ी के कौन रहम करेगा? मेरे मौला! ऐ मेरे मौला! तू हमेशा रहने वाला है और मैं मिटने वाला हूँ, और मिटने वाले पर सिवाए

बाक़ी रहने वाले के कौन रहम करेगा? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू राज़िक़ है और मैं मरज़ूक, और मरज़ूक पर रहम कौन करेगा सिवाए राज़िक़ के? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू सख़ी है और मैं बख़ील, और कौन बख़ील पर रहम करेगा सिवाए सख़ी के? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू आफ़ियत बख़्शने वाला है और मैं मुसीबतजदा हूँ, और मुसीबतजदा पर सिवाए आफ़ियत बख़्शने वाले के कौन रहम करेगा? मेरे मौला! ऐ मेरे मौला! तू बड़ा है और मैं छोटा, और छोटे पर सिवाए बड़े के कौन रहम करेगा? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू हादी है और मैं गुमराह, और गुमराह पर सिवाए हादी के कौन रहम करेगा? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू रहमान है और मैं क़ाबिल-ए-रहम, और क़ाबिल-ए-रहम पर सिवाए रहमान के कौन रहम करेगा? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू बादशाह है और मैं मुब्तिला-ए-मुसीबत, और मुब्तिला-ए-मुसीबत पर बादशाह के अलावा कौन रहम करेगा? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू रहबर है और मैं सर गर्दाँ, और क्या सर गर्दाँ पर कोई रहम करेगा सिवाए रहबर के? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू बख़्शने वाला है और मैं गुनाहगार हूँ, और क्या गुनाहगार पर सिवाए बख़्शने वाले के कोई और रहम करेगा? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू ग़ालिब है और मैं मग़लूब हूँ, और क्या मग़लूब पर ग़ालिब के अलावा और कोई रहम करेगा? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू परवरदिगार है और मैं परवरदा हूँ, और क्या परवरदा पर परवरदिगार के अलावा कोई और रहम करेगा? मेरे मौला ! ऐ मेरे मौला ! तू साहिब-ए-किबरियाई है और मैं ख़ाशेअ हूँ, और क्या साहिब-ए-किबरियाई के अलावा ख़ाशेअ पर कोई और रहम करेगा? मेरे मौला! ऐ मेरे मौला! मुझ पर रहम कर अपनी रहमत से, और मुझ से राज़ी हो जा अपने जूद-ओ-करम और फज़्ल-ओ-अहसान से, ऐ जूद ओ अहसान, फज़्ल ओ ने'मत वाले, अपनी रहमत से, ऐ सब से जियादा रहम करने वाले।

ए अल्लाह ﷻ रहमत नाज़िल फरमा मुहम्मद ﷺ पर, और मुहम्मद ﷺ की आल पर जैसा कि तुने रहमत नाज़िल फरमाई इब्राहिम عليه السلام पर और इब्राहिम عليه السلام की आल पर, बेशक तु तअ़ारिफ के लाईक़ और बडी बुज़ुर्गीवाला है।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

ए अल्लाह ﷻ बरकत नाज़िल फरमा मुहम्मद ﷺ पर, और मुहम्मद ﷺ की आल पर जैसा कि तुने बरकत नाज़िल फरमाई इब्राहिम عليه السلام पर और इब्राहिम عليه السلام की आल पर, बेशक तु तअ़ारिफ के लाईक़ और बडी बुज़ुर्गीवाला है।

IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION

(Ahl-e-Sunnah)

Founder & Chairman :

Dr. Shahezadhusain Yasinmiya Kazi

Mugalwada, Kasba, Modasa, Arvalli-383315 (Gujarat)

Mo. 85110 21786